

मोक्ष दंड तप

मोक्षदंड तप सर्व विघ्न विपत्ती नाशक है। यह तप करने के लिए गुरु महाराज का डण्डा जिनती मुट्ठी प्रमाण हो, उतने उपवास एकान्तर से करना। अन्तिम दिन गुरु दण्ड की आंगी पूजा यथाशक्ति करें।

1. 27 प्रदक्षिणा (फेरी) एवं 27 खमासमण लगायें।

(अ) फेरी लगाते हुए निम्न दोहा बोलें —
अग्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे।
साधु सुधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचे रे॥
(ब) एक-एक फेरी लगाने के बाद निम्नलिखित पदों का क्रमशः उच्चारण करते जायें।

1. सर्वतः प्राणातिपात विरमण व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
2. सर्वतः मृषावाद विरमण व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
3. सर्वतः अदत्तादान विरमण व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
4. सर्वतः मैथुन विरमण व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
5. सर्वतः परिग्रह विरमण व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
6. सर्वतः रात्रिभोजन विरमण व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
7. पृथ्वीकाय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
8. अप्काय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
9. तेउकाय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
10. वाउकाय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
11. वनस्पतिकाय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।

(स) प्रत्येक पद का उच्चारण करने के पश्चात् खमासमण देवें।

2. 27 साधिया करके ऊपर 1 नग फल (केला, सेव, नाशपत्ती, श्रीफल, बादाम आदि) तथा 27 नग नैवेद्य (चक्की, मखाने, चीरोंजी, साकर आदि) यथाशक्ति चढ़ायें।
3. 27 लोगस्स का कायोत्सर्ग करें।
4. 'ऊँ ह्रीं नमो लोए सव्व साहूणं' की 20 माला फेरें (पानी पीने के पहले 5 माला अवश्य फेरें)।
5. चैत्यवंदन तथा देववंदन करें।
6. यथासमय पच्चक्खाण लें।
7. जल लेने के पूर्व पच्चक्खाण पारने की क्रिया करें — इरियावहियं क्रिया, जयउसामिअ का चैत्यवंदन, मुंहपत्ती पडिलेहण आदि।

12. त्रसकाय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
13. श्रोतेन्द्रिय विषय वारकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
14. चक्षुरिन्द्रिय विषय बारकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
15. घ्राणेन्द्रिय विषय बारकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
16. रसनेन्द्रिय विषय बारकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
17. स्पर्शेन्द्रिय विषय बारकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
18. लोभ निग्रह कारकाय रक्षकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
19. क्षमादि दशविध श्रमणधर्म व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
20. शुभभावना भावकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
21. प्रतिलेखनादि शुद्ध क्रिया कारकाय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
22. संयमयोग युक्ताय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
23. मनोगुप्ति युक्ताय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
24. वचनगुप्ति युक्ताय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
25. कायगुप्ति युक्ताय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
26. शीतादि द्वाविंशति परिषह सहन तत्पराय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।
27. मरणांत उपसर्ग सहन तत्पराय व्रत संयुताय श्री साधवे नमः।